तनसिंह : जीवन, व्यक्तित्व और वैचारिक अवदान

विक्रम सिंह*

डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत**

तनसिंह राजस्थान के अग्रणी समाज सुधारक, राजनेता एवं लेखक रहे हैं, जिन्होंने राजस्थान के समाज और राजनीति पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने मात्र 22 वर्ष की आयु में श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना कर युवाओं में नेतृत्व, सामाजिक जागरूकता एवं संस्कारों के बीजारोपण का प्रयास भी किया। यह शोध-पत्र उनके जीवन, सामाजिक एवं राजनीतिक संचेतना में योगदान के साथ-साथ उनके लेखन का वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। 28 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली में आयोजित जन्म शताब्दी समारोह ने उनके योगदान की राष्ट्रीय प्रासंगिकता को उजागर किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राजनीतिक चेतना के साथ-साथ समाज में परिवर्तन लाने का दौर भी आरम्भ हो गया। मुख्यत: राजस्थान जैसे राज्य में जहाँ सामाजिक संरचना जटिल तथा परम्परा आधारित थी, वहाँ सामाजिक सुधार एवं संस्कार निर्माण जैसे दुष्कर कार्य को करने का बीड़ा तनसिंह जैसे समाज सुधारकों ने उठाया। वे न केवल एक प्रखर राजनेता थे, बल्कि समाज सुधारक, प्रगतिशील लेखक एवं संगठनकर्ता भी थे। उन्होंने विशेषत: क्षत्रिय समाज के युवाओं में संस्कार निर्माण एवं संगठित करने के उद्देश्य से 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' की स्थापना की, साथ ही रूढ़िवादी सामाजिक कुरीतियों को भी समाप्त करने का पुरजोर प्रयास किया।

तनसिंह भूस्वामी आन्दोलन के नेतृत्वकर्ताओं में से एक थे। संसद एवं विधानसभा में तनसिंह ने राष्ट्रीय एवं जनहित से जुड़े विषयों को सटीकता एवं प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत किया जिससे नीति निर्माण और सामाजिक सुधार में उनके दृष्टिकोण की स्पष्टता परिलक्षित होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र गुणात्मक, ऐतिहासिक-जीवनी दृष्टिकोण पर आधारित है। अध्ययन में तनसिंह के जीवन, सामाजिक सुधार, राजनीतिक विचारधारा और लेखन कार्य का वर्णनात्मक एवं विवेचनात्मक विश्लेषण किया गया है। डेटा संग्रह हेतु उनके लेख, पुस्तकों, भाषणों, संगठनात्मक अभिलेख और समकालीन समाचार पत्रों का उपयोग किया गया है। साथ ही उनके द्वारा स्थापित संस्था के स्वयंसेवकों तथा उनके समकालीन रहे व्यक्तियों के साक्षात्कार को भी शामिल किया गया

है। इस शोध पत्र का उद्देश्य तनसिंह के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करना है, ताकि उनके सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक योगदान को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। यह अध्ययन उनके नेतृत्व, नैतिक दृष्टिकोण और समाज सुधार के प्रयासों के साथ-साथ समाज में उनके विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता का व्यवस्थित प्रतिपादन प्रस्तुत करता है।

प्रारम्भिक जीवन परिचय

तनसिंह का जन्म अपने ननिहाल गाँव बैरिसियाला, जिला जैसलमेर में 25 जनवरी, 1924 को हुआ। तनसिंह के पिता समाजनिष्ठ व्यक्तित्व रामदेरिया के ठाकुर बलवन्त सिंह महेचा और माता मोती कँवर सोढा थी, जिनके द्वारा प्रदत्त संस्कारों का प्रभाव तनसिंह के जीवन पर स्पष्टत: दिखाई देता है। पिता के असामयिक निधन के पश्चात् दारिद्रययुक्त विषम परिस्थितियों में प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव रामदेरिया से प्राप्त की। वे एक मेधावी छात्र थे। जोधपुर के राजपूत स्कूल, चौपासनी में प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए चौपासनी राजपूत स्कूल से ही 1942 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की तथा सर्वश्रेष्ठ विधार्थी का खिताब हासिल किया।

1942 में उच्च शिक्षा बिड़ला जी के पैतृक गाँव पिलानी से प्राप्त की। इस दौरान उन्हें बिड़ला जी की ओर से तीन रूपये प्रतिमाह छात्रवृति भी प्राप्त होती थी जिसे वे अपने निर्धन मित्र कमलाकान्त सिंह को यह कहकर दे देते थे कि यह उनके एक धनी मित्र की ओर से गुप्तदान है। अपने अन्य साथियों के पढाई का खर्च उठाने के लिए उन्होंने कॉलेज के वाचनालय में नौकरी की, दातुन तोड़कर छात्रावास के धनी छात्रों को बेचा, छात्रावास की खाली जमीन पर सब्जियाँ उगाई, दर्जी की दुकान पर कपड़े सिलने का कार्य किया, यहाँ तक की छात्रावास के बर्तन मांजकर भी अपने मित्रों के अध्ययन का खर्चा उठाया। स्वयं कष्ट सहन करके भी अपने साथियों एवं सहयोगियों की सहायता करने का भाव बचपन से ही तनसिंह के व्यक्तित्व में विद्यमान था।

पिलानी में अध्ययन के समय ही जब 1942 से आजादी की लहर प्रारम्भ हुई तथा सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज का विस्तार हुआ तब तनसिंह ने देशप्रेम से ओतप्रोत होकर अपने साथियों के साथ हड़तालों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। इस पर कॉलेज प्रशासन ने उन्हें कॉलेज से निकाल दिया। कॉलेज प्रशासन द्वारा उन्हें निष्कासित किये जाने के विरोध में, उन्होंने कॉलेज के द्वार पर अनशन प्रारम्भ किया। यह अनशन उनके द्वारा अन्याय के विरूद्ध अहिंसक प्रतिरोध के रूप में सत्याग्रह को साधन के रूप में अपनाने

का प्रतीक है।[1]

तनसिंह के किशोरावस्था के अनुभव उनके व्यक्तित्व और मूल्य संरचना के प्रारंभिक परिचायक है। कॉलेज में अध्ययन के वर्षों में जब वे स्वयं भी आर्थिक कठिनाईयों का सामना कर रहे थे तब भी उन्होंने अपने मित्रो की सहायता करने का साहस दिखाया। इसका मुख्य कारण यह था कि वे शिक्षा को सर्वोच्च महत्व देते थे और अपने साथियों को आगे बढ़ते हुए देखना चाहते थे। उनकी इस पहल से स्पष्ट होता है कि उनके जीवन में महापुरुषत्व के प्रारंभिक संकेत किशोरावस्था से ही प्रकट होने लगे थे। तनसिंह का यह व्यवहार केवल सहयोग या मित्रता तक ही सीमित नहीं था अपितु यह उनके गहन नैतिक मूल्य, सेवा भाव और सामाजिक जिम्मेदारी का परिचायक भी था। उनके व्यक्तित्व में न केवल व्यक्तिगत संघर्ष को सहन करने की क्षमता थी बल्कि दूसरों की उन्नति में योगदान देने की प्रतिबद्धता भी विद्यमान थी, जो उनके बाद के राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक योगदानों के लिए आधारभूत सिद्ध हुई।

'श्री क्षत्रिय युवक संघ' की स्थापना एवं उद्देश्य

सन् 1944 की दीपावली को राजपूत छात्रावास, पिलानी में इस संघ की स्थापना की गई थी। उस समय यह संघ उन्हीं संस्थाओं की भांति था, जो सम्मेलन बुलाने और प्रस्ताव पास करने में अपने कर्तव्य की इतिश्री मानती थी। लगभग डेढ वर्ष तक इन्होंने भी इस क्रम को निभाया। इसका प्रथम अधिवेशन जोधपुर, दूसरा काली पहाड़ी में किया गया किन्तु कुछ अभाव और शून्य ऐसा था जिसे अनुभव तो किया जाता था लेकिन अभिव्यक्त नहीं होता था। 21 दिसम्बर, 1946 को जयपुर के मलसीसर हाऊस में इसी विचार-विमर्श के लिए तत्कालीन कार्यकारिणी को बुलाया गया। कार्यकारिणी के इस अधिवेशन ने 22 दिसम्बर को इसकी नयी कार्यप्रणाली को स्वीकृत कर तनसिंह को इस संघ का प्रथम संचालक होने का उत्तरदायित्व प्रदान किया। इस प्रकार 22 दिसम्बर, 1946 को ही श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना हुई। इसके दूसरे ही दिन 23 दिसम्बर को जयपुर में ही इसका पहला शिविर आयोजित किया गया। शिविर के अनुशासन, शिक्षण और सहयेाग की सफलता ने उनके इस विश्वास को और भी सुदृढ़ बनाया ताकि उनके आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके।[2]

श्री क्षत्रिय युवक बालक-बालिकाओं में संस्कार निर्माण के माध्यम से समाज चरित्र का निर्माण, निष्काम भाव से समाज और राष्ट्र के निमित एक संगठित शक्ति के उपार्जन हेतु अपने जीवन के समस्त द्रव्य समाज के निमित अर्पित करने के साथ-साथ यह

संघ उनमें भाव जाग्रत कर समाज सेवा हेतु समर्पित स्वयंसेवक तैयार करने का कार्य कर रहा था।[3] तनसिंह का मानना था कि व्यक्ति को समाज के सुधार से पूर्व स्वयं का सुधार करना आवश्यक है। इसलिए उन्होंने कहा है कि 'निज को न बनाया तो, जग रंच नहीं बनता।'[4]

समाज जागरण हेतु तनसिंह ने सामूहिक संस्कारमयी मनोवैज्ञानिक कर्मप्रणाली को अपनाया जिसमें दैनिक शाखाओं, शिविरों के विशेष वातावरण में अनुशासन, दृढ़ता, ईमानदारी, कष्ट सहिष्णुता, व्यवस्थित जीवन, त्याग, अहंकार का नाश, मितव्ययी जीवन, बन्धुत्व और सामूहिक जीवन आदि मूल्यों का निरन्तर अभ्यास करवाया जाता था। इसके अतिरिक्त विशेष शिविर, बालिका शिविर व दम्पति शिविरों का आयोजन भी संघ द्वारा किया जाता था, साथ ही समय-समय पर सम्पर्क यात्राओं, स्नेह मिलन तथा महापुरूषों की जयन्ती कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता था।[5]

राजनीतिक जीवन एवं विचाराधारा

सन् 1947 में तनसिंह बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए नागपुर चले गए। नागपुर प्रवास के दौरान ही तनसिंह की मुलाकात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर गुरूजी से हुई। 30 जनवरी, 1948 को जब गाँधी जी की हत्या हुई तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया। फलस्वरूप देश में एक सत्याग्रह छिड़ गया। तनसिंह ने कहा 'जब बिगुल बज जाता है तो सिपाही को लाइन में खड़े हो ही जाना चाहिए' वे भी सत्यागृह में कूद पड़े, तीन महीने जेल में रहे। जेल में उन्होंने सुना कि सरकार जोधपुर में सैनिक स्कूल खोलने के बहाने चौपासनी स्कूल को हथियाना चाहती है। जेल से छूटकर वे सीधे जोधपुर पहुँचे और युवकों को इकट्ठा कर अन्य गणमान्य लोगों के साथ मिलकर आन्दोलन की योजना बनाई। इस प्रकार का एक बड़ा आन्दोलन जोधपुर में पहली बार देखा गया जब मारवाड़ के गाँव-गाँव से लोग जोधपुर पहुँचकर सरकारी दुराग्रहपूर्ण नीतियों के विरूद्ध सड़कों पर बिछ गए। चौपासनी आन्दोलन में प्रचार-प्रसार, पब्लिक टैम्पो और 'रणभेरी' निकालने जैसी महत्वपूर्ण भूमिका तनसिंह ने निभाई। अन्ततः सरकार को झुकना पड़ा और आन्दोलन सफल रहा।[6]

सन् 1949 में नागपुर से वकालात की परीक्षा पास करने के बाद तनसिंह ने बाड़मेर आकर वकालत का पेशा अपनाया, पर यह पेशा उन्हें रास नहीं आया, क्योंकि इस पेशे में जो कुछ करना पड़ता था, वह वे कर नहीं सकते थे। इसी वर्ष मात्र 25 वर्ष की आयु में बाड़मेर नगरपालिका के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। बाड़मेर नगरपालिका अध्यक्ष के पद पर

रहते हुए तनसिंह ने बाड़मेर नगर के विकास में उल्लेखनीय कार्य किया जिससे वे शीघ्र ही पश्चिमी राजस्थान में लोकप्रिय हो गए।[7]

सन् 1952 में स्वतंत्र भारत के प्रथम आम चुनाव में जोधपुर के तत्कालीन महाराजा हनुवन्त सिंह ने मारवाड़ की सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किये। उन्होंने बाड़मेर से तनसिंह को उम्मीदवार बनाया था। बाड़मेर से विधानसभा का चुनाव जीतकर तनसिंह पहली बार राजस्थान विधानसभा पहुँचे। प्रथम विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष भी रहे।[8] राजनीति के साथ-साथ संघ कार्य भी उनके द्वारा अनवरत् रूप से जारी रहा। 1955-56 के भू-स्वामी आन्दोलनों में उनकी सक्रिय नेतृत्वकारी भूमिका रही। 1957 के द्वितीय आम चुनाव में तनसिंह बाड़मेर से दोबारा विधायक निर्वाचित हुए। 1962 में तनसिंह बाड़मेर-जैसलमेर के विशाल निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा चुनाव के प्रत्याशी बने। रोचक तथ्य यह है कि एक जीप, कुछ साथी तथा मात्र नौ हजार रूपये खर्च करके लोकसभा का चुनाव जीतकर वे सांसद बने। हालाँकि 1967 के आम चुनाव में वे विजयी नहीं हो सके।[9]

इसके पश्चात् दस वर्ष की सक्रीय राजनीति से मिले लम्बे अवकाश के समय का उपयोग उन्होंने व्यापार के माध्यम से अपने सहयोगियों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में लगाया। 1977 में पुनः बाड़मेर-जैसलमेर लोकसभा क्षेत्र से दोबारा सांसद बने तथा 1979 में मध्यावधि चुनावों में नामांकन फार्म भरने से पूर्व अपनी माँ से आशीर्वाद लेते समय 7 दिसम्बर, 1979 को तनसिंह ने अपनी माँ की गोद में ही अन्तिम सांस ली।[10]

तनसिंह की प्रजातंत्र में गहरी आस्था थी। उनके अनुसार जनतंत्रीय पद्धति का सच्चा लाभ हमें तभी मिलेगा जब हम इसे सम्पूर्ण व्यक्तित्व से अंगीकार करेंगे और यदि देश और राष्ट्र में जनतंत्र को हम सफल देखना चाहते है, तो हमें समाज में, यहाँ तक कि घर में भी इसे स्वीकृति देनी होगी। लोकतंत्र की सफलता के लिए वे राजनैतिक शिक्षण को आवश्यक मानते थे और क्योंकि विद्यालय ही चरित्र निर्माण का कार्य करते है तो राजनैतिक चरित्र निर्माण का उत्तरदायित्व भी उन्हें सौंपा जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में यह भी सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि प्रत्येक शिक्षक अपने विषय का ज्ञाता होने के साथ-साथ जीवन शिक्षा का भी विद्वान हो।[11]

1917 में सम्पन्न हुई सोवियत संघ की बोल्शेविक क्रान्ति से उत्पन्न समाजवादी विचारधारा का प्रभाव तत्कालीन भारत के बुद्धिजीवियों एवं जवाहरलाल नेहरू सहित अन्य काँग्रेस के नेताओं पर भी हुआ।[12] तनसिंह का राजनैतिक दर्शन भी समाजवाद से प्रभावित था किन्तु समाजवाद की उनकी अपनी अलग परिभाषा थी, जिसे उन्होंने 'सांघिक

समाजवाद' नाम दिया। उनके अनुसार समाजवाद का उद्देश्य व्यक्ति और व्यक्ति के सम्बन्धों को पूर्ण करता हुआ उसकी आत्यांन्तिक उन्नति का सहायक बनना है।

मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं रोजी-रोटी की चिन्ता से मुक्ति के साथ ही, हर व्यक्ति को आर्थिक, धार्मिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक नियमों को स्वच्छापूर्वक ग्रहण करने की शिक्षा भी मिले। इतना ही नहीं उसकी गुरूशक्ति के पास राज्य शक्ति से भी कहीं अधिक औजस्विता और प्रभाव शक्ति होगी जो नियम भंग के समस्त अवसरों को स्वेच्छापूर्वक न्यूनतम बनाने की प्रक्रिया उत्पन्न करेगी। उनका कहना था कि 'मेरे समाजवाद में मजदूर, मिल मालिक के लिए त्याग करेगा और मिल मालिक मजदूर के लिए। इसको हम एक छोटे से उद्योग अथवा मामूली-सी दुकान से प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें पूंजी वाले को उसी पूंजी का ब्याज मिले और लाभ का कर्मचारियों में समान वितरण हो। उसी लाभांश से उनकी आवश्यकताओं का विनियोजन तथा सम्पादन किया जा सकता है।'[13]

गौरतलब है कि तनसिंह ने 1967 के लोकसभा चुनाव के पश्चात आर्थिक क्षेत्र में कदम रखते हुए संघ एवं स्वयंसेवकों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए 'भगवती कृषि यंत्रालय' नाम से कृषि सहायक उपकरणों का प्रतिष्ठान प्रारम्भ किया जिसकी शाखाएँ सिवाना, समदड़ी, बाड़मेर, बिलाड़ा, जोधपुर, कपासन, पाली, चित्तौड़गढ़, तथा जैतारण में थी और जिसमें कर्मचारी लगभग संघ के स्वयंसेवक ही थे। इस व्यवसाय में तनसिंह ने अपने सांघिक समाजवाद के सिद्धान्त का पालन किया और व्यापार भी अपेक्षा से कहीं अधिक सफल रहा। जो यह दर्शाता है कि तनसिंह ने सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक या आर्थिक क्षेत्र में भी जिन भी सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया उसका व्यावहारिक एवं वास्तविक प्रयोग अपने स्वयं के जीवनकाल में ही कर दिखाया।

भारत-चीन युद्ध के समय जब संसद में सभी राजनीतिक दल तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का जमकर विरोध कर रहे थे। ऐसी स्थिति में तनसिंह ने सभी सांसदों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'यह समय एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने के बजाय दुश्मन के समक्ष सामूहिक एकता दिखाने का है। मेरा तो यहाँ तक कहना है कि यदि श्री नेहरू न होकर दूसरा कोई भी नेता हो तो भी राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में हर एक देशवासी का कर्तव्य हो जाता है कि उसे पूर्ण समर्थन और सहयोग दे।'[14]

उन्होंने संसद में खाद्य सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, किसानों को उपज का उचित मूल्य दिलवाने, न्यायालय की स्वतंत्रता, गुटनिरपेक्षता की नीति की वर्तमान

प्रासंगिकता आदि प्रगतिशील प्रस्ताव रखे, जो भारत में सशक्त लोकतन्त्र स्थापित करने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।[15]

लेखन कार्य

तनसिंह जब कक्षा आठवीं में पढ़ते थे तब से उनके लेख भी कई मासिक व पाक्षिक पत्रों में प्रकाशित होते रहते थे। पिलानी कॉलेज के पुस्तकालय का उन्होंने पूरा लाभ उठाया। राजस्थानी साहित्य का गहन अध्ययन किया और 'राजस्थान रा पिछोला' नामक पुस्तक भी लिखी। 'उत्थान' नामक हस्तलिखित पत्रिका के उप-सम्पादक रहे। पिलानी में रहते हुए ही 'जीवन पुष्प' नामक पुस्तक लिखी जो उनके स्वयं के जीवन पर प्रकाश डालती है। परन्तु यह पुस्तक अप्रकाशित है एवं संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में इसके हस्तलिखित अंश सुरक्षित है। बाड़मेर में तनसिंह ने एक अपना स्वयं का प्रेस शुरू कर 'संघर्ष' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया था।[16]

तनसिंह ने अपने जीवनकाल में विविध विषयों से सम्बन्धित पन्द्रह पुस्तकों की रचना की। गीता को अपना मार्गदर्शक ग्रन्थ मानते थे। गीता के मूल सन्देश को स्वधर्म पालन एवं समाज सेवा की दृष्टि से स्पष्ट करने के लिए उन्होंने 'गीता और समाज सेवा' नामक पुस्तक की रचना की। उन्होंने लिखा है कि 'गीता ने एक नवीन क्रान्तिकारी विचार को जन्म दिया है कि मनुष्य योनि पाकर ईश्वर प्राप्ति के लिए उसका विसर्जन करना ही सत्य-साधना नहीं है बल्कि अपने सामाजिक कर्तव्य के निर्वहन से भी ईश्वरीय प्राप्ति हो सकती है।'[17] तनसिंह द्वारा लिखे गए 166 गीतों, कविताओं आदि का संकलन कर 'झनकार' नाम देकर पुस्तक का संकलन किया गया है।[18]

'जेल जीवन के संस्मरण' पुस्तक में द्वितीय भूस्वामी आन्दोलन के समय तनसिंह को गिरफ्तार कर टोंक जेल में रखा गया था। इसमें उन्होंने जेल के वातावरण, सरकार के रवैये तथा भूस्वामी आन्दोलन के बारे में अपने संस्मरणों का उल्लेख किया है।[19] तनसिंह दैनिक डायरी लिखते थे 1964 के बाद की उनकी सुरक्षित डायरियों का संकलन कर 'डायरी' नाम से पुस्तक का प्रकाशन संस्था द्वारा किया गया है।[20]

तनसिंह ने इतिहास के माध्यम से समाज में आत्मसम्मान एवं गौरव की भावना का सृजन करने के लिए 'बदलते दृश्य', 'राजस्थान रा पिछोला' तथा 'होनहार के खेल' आदि पुस्तकों का लेखन किया था। सामाजिक एवं आध्यात्मिक उत्थान हेतु साधना तथा शिक्षण के लिए उन्होंने समाज चरित्र, साधना पथ, साधक की समस्याएँ तथा शिक्षक की समस्याएँ आदि पुस्तकों की रचना की, जो कि व्यक्ति का व्यष्ठि से समष्ठि तथा समष्ठि से

परमेष्ठी तक की लम्बी एवं दुर्गम यात्रा का व्यावहारिक एवं मनोवैज्ञानिक पद्धति से मार्गदर्शन करती है।

संघमार्ग पर चलने वाले अनुगामियों के अनुभवों का रोचक और मनोरंजक भाषा में वर्णन उन्होंने 'लापरवाह के संस्मरण' तथा 'पंछी की रामकहानी' पुस्तकों मे किया है। तनसिंह ने स्वयं अपनी आत्मकथा 'एक भिखारी की आत्मकथा' नाम से लिखी जिसमें उनके जीवन के संघर्षों, घटनाओं तथा समय-समय पर हुए अनुभवों का वर्णन है।[21]

तनसिंह का जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व केवल साहित्यिक या राजनीतिक संदर्भों तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सामाजिक सुधार, नैतिक पुनर्जागरण और संगठनात्मक चेतना की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। उनकी विचारधारा और कार्यों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक संतुलित सेतुबंध का निर्माण किया। जहाँ एक ओर वे भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़े रहे, वहीं दूसरी ओर उन्होंने बदलते हुए समय के अनुरूप युवाओं में जागरूकता, अनुशासन और आत्मबल का संचार कर उन्हें सामाजिक परिवर्तन का वाहक बनाया। उनकी संगठनात्मक दृष्टि 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रतिफलित होती है।

तनसिंह के व्यक्तित्व तथा दृष्टिकोण को समझने के लिए शोधकर्ता ने तनसिंह के निकट सहयोगी रहे एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ सदस्य महावीर सिंह सरवड़ी (आयु 85 वर्ष) से साक्षात्कार किया। यह साक्षात्कार अप्रैल 2025 में बाड़मेर (राजस्थान) में सम्पन्न हुआ।[22]

महावीर सिंह सरवड़ी ने बताया कि तनसिंह 'अनुशासन और आत्मसंयम के जीवंत प्रतीक थे।' उनके अनुसार, वे जिस प्रकार संगठन के स्वयंसेवकों से संवाद करते थे, उसमें समानता, सम्मान और सहानुभूति की भावना सदैव झलकती थी। तनसिंह के लिए नेतृत्व का अर्थ था 'पहले स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करना।' यह कथन उनके नेतृत्व की गहराई को स्पष्ट करता है।

राजनीतिक जीवन के संदर्भ में भी तनसिंह ने समाजसेवा को सर्वोपरि रखा। महावीर सिंह ने कहा कि 'उनके लिए राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं थी अपितु यह समाजसेवा का विस्तार मात्र थी।' यह दृष्टिकोण उन्हें सामान्य राजनेताओं से अलग बनाता है, क्योंकि वे राजनीति में भी नैतिकता, जनसेवा और राष्ट्रीय हित की भावना को प्राथमिकता देते थे।

साहित्यिक योगदान के विषय में महावीर सिंह का कथन उल्लेखनीय है—

'तनसिंह ने युवाओं को व्यावहारिक शिक्षण और मार्गदर्शन देने के लिए साहित्यिक रचनाओं का सहारा लिया साथ ही उनकी रचनाओं में समाज के प्रति पीड़ा भी दिखाई देती है।' यह कथन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि तनसिंह के साहित्य में उनके जीवन दर्शन की सजीव अभिव्यक्ति निहित है। उनके लेख और भाषण समाज में केवल विचार नहीं, बल्कि आचरण परिवर्तन के आधार भी बने।

साक्षात्कार से यह भी स्पष्ट होता है कि तनसिंह का प्रभाव उनके समकालीन लोगों के जीवन पर गहरा और स्थायी था। उनके सहयोगी उन्हें केवल एक नेता नहीं, बल्कि एक विचारधारा के रूप में देखते हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित कर्तव्यपालन, अनुशासन, सेवा और समर्पण के आदर्श आज भी सामाजिक जीवन में प्रासंगिक हैं।

तनसिंह एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने अपने जीवन को समाज एवं राष्ट्र की सेवा में पूर्णतः समर्पित कर दिया था। उनका मानना था कि व्यक्तिगत उपलब्धियाँ तभी सार्थक है जब वे सामाजिक हित में रूपांतरित हो। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया था कि 'मेरी समस्त उपलब्धियाँ सामाजिक न्यास है, जिसका हितधारक समाज का प्रत्येक व्यक्ति है।'

तनसिंह के सम्पर्क में आने वाले लोगों के जीवन-दर्शन, व्यवहार एवं चिंतन में उल्लेखनीय रूपान्तरण हुआ, जो उनके प्रेरक व्यक्तित्व की गहराई को अभिव्यक्त करते हैं। उन्होंने राजनीति को सत्तासाधन नहीं, बल्कि समाज सेवा तथा जनजागृति का माध्यम माना। तनसिंह का प्रभाव केवल राजनीति क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, अपितु उन्होंने समाज जागरण, युवाओं में संस्कार निर्माण के साथ-साथ साहित्यिक एवं वैचारिक गतिविधियों के माध्यम से भी जनमानस में छाप छोड़ी, जिसका जनमानस पर स्थायी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ

1. *पूज्य श्री तनसिंह जी : एक परिचय, नवम् संस्करण,* श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2021, पृ. 5
2. तनसिंह, 'श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना और उसका क्रमिक विकास,' *रजत जयंती विशेषांक,* जयपुर : श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास,(दिसम्बर 1971), पृ.1-3
3. *श्री क्षत्रिय युवक संघ संक्षिप्त परिचय,* नवम् संस्करण, श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2021, पृ. 10

4. तनसिंह, *झनकार,* पंद्रहवाँ संस्करण, श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2018, पृ. 125
5. *श्री क्षत्रिय युवक संघ संक्षिप्त परिचय,* नवम् संस्करण, पृ. 13
6. *पूज्य श्री तनसिंह जी : एक परिचय,* नवम् संस्करण, पृ. 9
7. वही, पृ. 10
8. राजस्थान विधान सभा, 'आधिकारिक वेबसाइट', अभिगमन दिनांक 27 सितम्बर 2025, https://assembly.rajasthan.gov.in
9. *पूज्य श्री तनसिंह जी : एक परिचय,* नवम् संस्करण, पृ. 12
10. वही, पृ. 12
11. तनसिंह, 'दर्शन की अस्पृश्यता', *जन्म शताब्दी स्मारिका,* श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2024, पृ. 22–25
12. *स्वतंत्र भारत में राजनीति,* एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा 12, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT), नई दिल्ली, 2005
13. तनसिंह, 'सांघिक समाजवाद', *रजत जयंती विशेषांक,* श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, दिसम्बर 1971, पृ. 44
14. तनसिंह, 'स्पीच', *लोकसभा डिबेट्स (ऑफिसियल रिपोर्ट),* नवम्बर 13, 1962, लोकसभा सचिवालय, नई दिल्ली, भारत सरकार, पृ. 1325–1329
15. वही
16. *पूज्य श्री तनसिंह जी : एक परिचय,* नवम् संस्करण, पृ. 9
17. तनसिंह, *गीता और समाज सेवा,* अष्टम संस्करण, श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2021, पृ. 65
18. तनसिंह, *झनकार,* पन्द्रहवां संस्करण, पृ. 65
19. तनसिंह, *जेल जीवन के संस्मरण,* चतुर्थ संस्करण, श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2019, पृ. 16
20. तनसिंह, *डायरी,* चतुर्थ संस्करण, श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2021, पृ. 108
21. तनसिंह, *एक भिखारी की आत्मकथा,* पंचम संस्करण, श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास, जयपुर, 2021, पृ.27
22. महावीर सिंह सरवड़ी, तनसिंह के व्यक्तित्व पर साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्ता –

विक्रम सिंह, व्यक्तिगत साक्षात्कार, बाड़मेर, 21 अप्रैल 2025

शोधार्थी *
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान)
सहायक आचार्य **
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान)